



कलामे बख़्शीश

Vol-1

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

Last Updated: 20-Oct-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ ﷺ

कलामे बख़्शीश

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

Vol-1



FAYAZ MOHAMMED (Shakir)
City Neral, Dist. Raigad - Maharashtra (INDIA)
Mob. +91-9867862152

नज़्मी तर्जुमा (सुरेह फातेहा)

नोट:- तर्जुमा कंज़ुल ईमान और तफ्सीर सिरातूल जीनान जिसके मायने और मत्लब का ध्यान रखते हुए सुरेह फातेहा का ये नज़्मी तर्जुमा इस फकीर ने लिखने की कोशिश की है
(अल्लाह अपने हबिबे पाक हुज़ूर ﷺ के सदके वासिले से कुबूल फरमाए ... आमीन)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से है आगाज़े बयां
है जो बहोत ही करीम व महेरबां

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَۙ ۝١

सब तारीफों तौसीफ उसी के लिए
है उसी की मिल्कियत में सारा जहां

الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِۙ ۝٢

चार-सू हैं सब उसी के नेमतें
है सब के लिए जो रहीमो रेहमां

مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِؕ ۝٣

होगी रोज़े जज़ा उसी की बादशाही
होगा अदलो इंसाफ उसी का वहां

اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَاِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُؕ ۝٤

तेरी ही बंदगी ता-उम्र करते रहें
फक़त तुझी से मिले मददो एहसां

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَۙ ۝٥

राहे हिदायत पर रहूं साबित क़दम
चला हमको हमेशा सीधा निशां

صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ

जिसको भी तू ने करम से नवाज़ा
उसी को मिला तेरा फैजलो एहसां

غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ ۝٧

बद-अमल लोगों से सदा बचाए रखना
बद-अकिदगी का ना हो हम में कोई निशां

﴿آمين﴾

तेरी बारगाह में शाकिर की ये दुआ है
केह रहा है आमिं, अपनी हाले ज़ुबां

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



या इलाही ये तेरा हम पे बड़ा एहसान है
ज़िन्दगी तू ने दिया तू बड़ा रेहमान है

या इलाही जो शुरू करते हैं तेरे नाम से
खैर से रेहते हैं वो ये तेरा एलान है

या इलाही तू ने ही पैदा किया हर चीज़ को
तू ही खालिक़े-जहां ये मेरा ईमान है

या इलाही तू ने जो अपने बंदों को दिया
रोजो-शब पढ़ते हैं जो वो तेरा क़ुरान है

या इलाही हर जगह तेरी हुकूमत ही तो है
तेरी ज़ाते किब्रिया तू मेरा फरमान है

या इलाही तू ने ही बख्शा है सारी नेमतें
शुक्र हो कैसे अदा अक्ल ये हैरान है

या इलाही तेरे सिवा पुर्साने हाल ही नहीं
हर घड़ी हर लम्हा तेरा मुझ पे ये एहसान है

या इलाही जब चलूं तन्हा अंधेरी रात में
रौशनी कर तू अता रास्ता अंजान है

या इलाही बख़्श दे शाकिर को तू अपने करम
वास्ता मेहबूब ﷺ का ये मेरा अरमान है



हम्दे-बारी ता'ला (या इलाही)

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर





तराना सुन्नी दावते इस्लामी

एहले सुन्नत की है शां सुन्नी दावते इस्लामी
सुन्नियत की है ये जुबां सुन्नी दावते इस्लामी

जिसने इसको सर-बुलंद सारी दुनिया में किया
लफ़्ज़ों में हो क्या बयां सुन्नी दावते इस्लामी

मुरशिदे हक ने सिखाई इल्मो खुल्क आम हो
घर मुहल्ला हो अयां सुन्नी दावते इस्लामी

"या रसुल्लाही उंज़ूर हालना" पढ़ते हैं हम
है फैजाने दो जहां सुन्नी दावते इस्लामी

वादिये नूरी में जो आते है देखो शान से
कित्ना प्यारा है ये समां सुन्नी दावते इस्लामी

हर मैदाने इज्तेमा में हैं रियाज़ उद्दीं खड़े
देते हैं प्यारी अजां सुन्नी दावते इस्लामी

बुलबुले बागे मदीना पढ़ते हैं जब नाते सुख़न
क्या हसीं अंदाजे रिज़वां सुन्नी दावते इस्लामी

सादिक़े रज़वी भी हैं शाना ब शाना यहीं
करते हैं ख़िदमात यहां सुन्नी दावते इस्लामी

वो अमीनुल क़ादरी जो हैं सय्यद आले रसूल
नौजवानों की है जां, सुन्नी दावते इस्लामी

है अताए मुफ्ती ए आज़मे हिन्द केहलाते हैं वो
शाकिरे नूरी निगेहबां, सुन्नी दावते इस्लामी

गैसो ख़्वाजा का करम लिलाह सदा हो हर क़दम
शाकिर ! मिले फैजे निशां, सुन्नी दावते इस्लाम ... (आमिम)

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

www.sunnidawateislami.net

इस घर के शान मुसलमां भूल गए हैं
मस्ज़िद है कहां मुसलमां भूल गए हैं

सारे ज़माने की बातें यहां चल रही हैं
ये बैठे हैं कहां मुसलमां भूल गए हैं

बे-ख़ौफ होकर तिजारत करते हैं लेकिन !
ख़ौफे-ख़ुदा व ज़बां मुसलमां भूल गए हैं

महफ़िले दुनिया में मस्त लोगों को ख़बर नहीं
बाबरी मस्ज़िद की दास्तां मुसलमां भूल गए हैं

कित्नी आबाद हैं मस्जिदें खुद से पूछें ज़रा
उफ़, ये आवाज़े-अजां मुसलमां भूल गए हैं

दावए-इश्क़ बहोत हैं औलिया से यहां लेकिन !
गैसो-ख़्वाजा का फरमां मुसलमां भूल गए हैं

ख़्वाबे ग़फ्लत की ये निन्द अच्छी नहीं शाकिर
क्या है दिनो-ईमां मुसलमां भूल गए हैं

मस्ज़िद है कहां मुसलमां भूल गए हैं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

एक निगाहे करम मेरे आका ﷺ

तेरी रहमत का मोहताज हूं मै
तेरे फज़्ल का मोहताज हूं मैं
एक निगाहे करम मेरे आका
हमको अपना समझ के बुलालो
जालियों पर निगाहे जमी हैं

मेरा सब कुछ तुम्ही पे फिदा है
आका सब कुछ तुम्ही ने दिया है
एक निगाहे करम मेरे आका
पुल सिरात से पार अब करादो
जालियों पर निगाहे जमी हैं

जाने कब से खड़ा हूं यहां मै
जाने कब से पड़ा हूं यहां मै
एक निगाहे करम मेरे आका
रोज़े महशर शाफात करदो
जालियों पर निगाहे जमी हैं

सारी उम्र गुनाह किया हूं
सारी उम्र खताएं किया हूं
एक निगाहे करम मेरे आका
कब्र में आके हम को बचालो
जालियों पर निगाहे जमी हैं

उनके दस्ते करम से अता हो
उनके फजलो करम से अता हो
एक निगाहे करम मेरे आका
जामे कौसर हमें भी पिलादो
जालियों पर निगाहे जमी हैं

मैं तो शाकिर बना हूं अभी ही
मैं तो नूरी बना हूं अभी ही
एक निगाहे करम मेरे आका
हम सभी को मदीने बूलालो
जालियों पर निगाहे जमी हैं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

मंकबत: ख्वाजा पिया हमारे



ख्वाजा पिया हमारे नज़रे करम खुदारा
मेरा आसरा तुम्ही हो, तुम्ही मेरा सहारा

तुफान ने मुझको घेरा, अब क्या करूं बताओ
कश्ती तुम्ही पे छोड़ी, तुम्ही मेरा कीनारा

गुम होगया हूं मै तो, दुनिया के रास्तों में
दामन में अपने लेलो, फिरता हूं मारा मारा

सब कुछ गंवा दिया है, दो दिन की जिन्दगी में
ख्वाजा पिया संभालो, मैं फकीर हूं तुम्हारा

हमको भी कुछ अता हो, गैसुल-वरा का सद-का
दुनिया भी आज देखे, हो करम का वो नज़ारा

कोई वास्ता नहीं है, कोई रास्ता नहीं है
मेहशर में लाज रखलो, ख्वाजा पिया हमारा

ये करम हमेशा **नूरी**, अक्सर मिला है उनसे
मेरा काम बन गया है, जब भी उन्हें पुकारा

दामन को मेरे भरदो, आंखें जो मुन्तजिर हैं
इतना भरम तो रखना, **शाकिर** है बस तुम्हारा

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

मै बेहद बुरा हूं

मैं बेहद बुरा हूं, निगाहे करम हो
सरापा गुन्हा हूं, निगाहे करम हो

मुझे ज़िन्दगी का सलीका नहीं है
मगर चाहता हूं, निगाहे करम हो

मुझे अपने दर पे बुलवा लो आका
के बेबस खड़ा हूं, निगाहे करम हो

कहां से वो खुशियां मैं लाऊं जाकर
के दिल रो रहा है, निगाहे करम हो

के शैतान ने मुझको बोहोत है सताया
पनाह चाहता हूं, निगाहे करम हो

मदीने की उल्फत है सर्मया मेरा
आका तुम्हारी ही उल्फत है सर्माया मेरा
मैं बस आपका हूं, निगाहे करम हो

और अता कीज्ये अदब का खजिना
मैं तैबा चला हूं, निगाहे करम हो

नहीं कुछ पता मेरी ज़िन्दगी का
अमा चाहता हूं, निगाहे करम हो

अमल कुछ नहीं, कुछ कहने के लायक
मैं काबिल बना हूं, निगाहे करम हो

है रहमत तेरी सारे आलम में छाई
करम मांगता हूं, बस निगाहे करम हो

शाकिर तेरा रो रहा है यहां पे
मैं तुम्हें चाहता हूं, निगाहे करम हो

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

नसीब हो



या रब मदीना फ़िर हमें जाना नसीब हो
फज लो अताए मुस्तफा पाना नसीब हो

मक्का नसीब हो हमें, तैबा नसीब हो
मेरे खुदा मुझे वहां जाना नसीब हो

होती है रोजो शब जहां रहमत की बरिशें
फज लो करम से मुझको भी, नहाना नसीब हो

दस्ते करम नसीब हो, सेहरा नसीब हो
गलियों में उनके घूमना फिरना नसीब हो

तस्वीरों में तो देखा है कई बार मगर
काबे को अपने हाथों से छुना नसीब हो

दौड़ी थीं माई हाजरा जिस करब ओ दर्द से
वैसा सफा से मरवा, हमें चलना नसीब हो

आंखों की प्यास दूर हो, दीदार ए हरम से
ज़म ज़म से प्यासे दिल को बुझाना नसीब हो

इसके सिवा तो कोई भी, ख्वाहिश नहीं मेरी
मरने से पहले एक बार मदीना नसीब हो

मौत आए तो हो सामने रौजा हुज़ूर का
खाके बक़ी में अपना ठिकाना नसीब हो

शाकिर ये दुआ है मेरी, एय रब्बे मुस्तफा ﷺ
महशर में उनके कुरब को, पाना नसिब हो

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



हर ज़माना मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

हर ज़माना मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है
हर फसाना मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

जिसकी ख्वाहिश हमेशा रेहती है
वो मदिना मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

उनके कुर्ब में एक नशा सा है
वो ठिकाना मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

बटती है कौनैन में जिसकी बरकतें
वो खज़ाना मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

जिसके आगे चांद भी पिका है
वो रूखे अनवर मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

सारे फूलों ने वो महेक नहीं पाई
जो पसीना मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

जो मलायका रोजो शब पढ़ते हैं
वो तराना मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

जानो दिल से पढ़ा है हमने जो
वो तो कलमा मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

ऐ काश फरिश्ते कब्र में केह दें
ये दीवाना तो मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

रोज़े मेहशर जो पीने मिल जाए
वो आबे कौसर मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

सारे नबियों में सबसे अफ़ज़ल है
वो मौजेजा मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

जो सहाबा जानो दिल फिदा करते हैं
ऐसा रुत्बा मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

जिसने सजदे में अपना सर कटाया है
वो नवासा मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

दिल की नज़रों से देखो तो **शाकिर**
सारा आलम मेरे हुज़ूर (ﷺ) का है

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

है मदीने में हम

फयाज़ मुहम्मद शाकिर

खोया खोया ये दिल है मेरा,
है मदीने में हम
हम यहां आएं हैं आप ही के करम,
है मदीने में हम

दिल मेरा रो रहा है तुम्हारे लिए
हां बस तुम्हारे लिए ...
आंसुओं की लड़ी साथ लाएं हैं हम,
है मदीने में हम

है गुन्हाओं तले मैं दबा ही रहा
हां बस डूबा ही रहा ...
शर्म से है मेरी आंख नम
है मदीने में हम

सब की सब मुश्किलें हल होने लगीं
दूर हटने लगीं ...
जब बढ़ाने लगें ये कदम
है मदीने में हम

कोई हुस्ने अमल पास मेरे नहीं
हाँ कोई ठीक नहीं ...
रोज़े महशर तुम्हीं राखलो ये भरम
है मदीने में हम

दिल सुकूं पा गया **शाकिर** अब ये तेरा
हां अब ये तेरा ...
ज़िन्दगी में जो आए अब कितने ही गम
है मदीने में हम

जहां गुंबदे खज़रा जलवा नुमा है
वो जन्नत नहीं है तो फिर और क्या है
मैं सुए मदीना बुलाया गया हूं
ये उल्फत नहीं है तो फिर और क्या है

मकामे मुहम्मद (ﷺ) को क्या पूछते हो
के वो मालिके आबे कौसर जो ठहरे
आका पिलाएंगे दस्ते करम से
ये किस्मत नहीं है तो फिर और क्या है

उनसे मिला है खुदा के करम से
हां सब कुछ मिला है उन्हीं के करम से
यही आपका लुत्फे ऐं ने करम है
ये रहमत नहीं है तो फिर और क्या है

क्या क्या मैं देखूं जाकर मदीने
के उनकी गली में गुम होगया हूं
तसव्वुर में आका तुम्ही बसे हो
ये निस्बत नहीं है तो फिर और क्या है

न गम कर तू **शाकिर** उस रोज़े मेहशर
के कोई भी पुरसाने हाल ना होगा
हाथों में होगा दामन तुम्हारा
ये अज्मत नहीं है तो फिर और क्या है

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

जहां गुंबदे खज़रा

मैं ऐसे आगया हूं, दरबारे मुस्तफा ﷺ में
खुदको भुला दिया हूं, दरबारे मुस्तफा ﷺ में

क्या अब भी मेरे मौला तेरा करम ना होगा ?
तन्हा ही चल पड़ा हूं, दरबारे मुस्तफा ﷺ में

अपने खुदा को सजदा में करके गुम होगया हूं
और दिल भी झुका दिया हूं, दरबारे मुस्तफा ﷺ में

उम्र तमाम गुजरी मेरी गुनाहों में इस तरह
अब शर्मिंदा हो रहा हूं, दरबारे मुस्तफा ﷺ में

मेरी ज़ूबां तो बिल्कुल खामोश हो गई है
अश्कों से केह रहा हूं, दरबारे मुस्तफा ﷺ में

शाकिर तुझे वहां अब क्या ये होगया है
रुकते नहीं हैं आंसुं, दरबारे मुस्तफा ﷺ में

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

दरबारे मुस्तफा ﷺ में...

दुआ

खुदा-वंद तेरा मैं करम चाहता हूं

खुदा-वंद तेरा मैं करम चाहता हूं
तेरी बारगाह से रहेम चहता हूं

गुनाहों से दामन मेरा साफ करदे
मैं मुजरिम हूं मौला मुझे माफ़ करदे
यही इक तमन्ना है ऐ मेरे अल्लाह ...
मैं हर वक्त तेरी रज़ा चहता हूं

मेरी ज़िन्दगी में वो दिन भी आए
के पोहचुं मदीने सर को झुकाए
मैं दामन पसारे बैठा हूं मौला ...
के मरने से पहले यही चाहता हूं

खुदाया मेरी बस इतनी दुआ है
हो ईमां सलामत यही इल्तेजा है
न हो शर्म से पानी मेरी निगाहें ...
मैं शैता से तेरी पनाह चाहता हूं

मकामे मुहम्मद (ﷺ) का सदका अता हो
मैं बेबस हूं मौला, मुझे कुछ अता हो
चला जाऊंगा इक दिन मैं दुनिया से लिल्लाह
तेरे अर्श के साए जगह चाहता हूं

वो अंदाजे अहमद राजा कुछ नहीं है
मेरे पास मौला ये सब कुछ नहीं है
शाकिर करे कैसी तेरी हमदो सनाएं ...
मैं तुझसे खुदा वो हुनर चाहता हूं

- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

७२ का कारवां

लख्ते जिगर को अपने से यूं जूदा करदीया
एक मुष्ते खाक को सुपुर्दे खाक करदिया

दुनिया ने देखली सब्रो शुजा-अत इमामे हुसैन की
करबला के जां निसारों ने वो हक अदा करदिया

वो ७२ का कारवां चला था कुछ इस शान से
जो वादा कुफा को दिया था, वफा करदिया

ना फिक्रे दुनिया थी, ना और कोई तोशा
अज़मते इमाम पर सबने सरे ख़म तस्लीम करदिया

आए थे हूर सामने बर-ख़िलाफ़े इमाम
खुतबा-ए-शब्बीर ने उन्हें मोंम करदिया

हजारों का शोर बरपा था, लश्करे यजीद में
तन्हा हुसैन ने उन्हें ख़ामोश करदिया

सरे अनवर तन से जूदा तो होगया लेकिन
एक पर्चमे हक हुसैन ने सर-बुलंद करदिया

अली के जां-निसारो ने अपनी जां लूटा कर
शरीयत की हिफाज़त का हमें सामां करदिया

अपनी ज़ूल-फिकारे हैदरी से बातिल को मिटाकर
शाकिर देखो तो सही हुसैन ने क्या करदिया

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

दर तुम्हारा मिल गया

मेरे आका(ﷺ) दर तुम्हारा मिल गया
बे-सहारों को सहारा मिल गया

हर तरफ तुफां ने घेरा था मगर
हमको तैबा का किनारा मिल गया

उम्र भर जिसकी तमन्ना थी मुझे
आज मुझको वो नज़ारा मिल गया

ख्वाब में अक्सर मदीना देख कर
मेरे रब का एक इशारा मिल गया

आपके कदमों में जबसे आगया
मैंने जो खोया दोबारा मिल गया

फज़ले रब से तूने शाकिर पालिया
नूरे हक़ का वो सितारा मिल गया

\- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

मंन्कबत: शाने क़मर अली दुर्वेश

رحمۃ اللہ علیہ

कमर अली की शान है वली अल्लाह की
लोग पाते हैं यहां नेमत अल्लाह की

वो दुर्वेश हैं, आला है दरबार उन्का
देखने मिल्ती है यहां कुदरत अल्लाह की

वोह ११ के इशारों से उठ जाता है हवा में
बे-जां पत्थर को मिली है निस्बत वली अल्लाह की

भूकों को मिल गया खाना बिन मांगे यहां
अंधे वहाबी देख ले करामत वली अल्लाह की

मख़दूमे सिम्नां, साबीरे कलियर और माहीमी
हिन्द में चलती है हुकूमत वली अल्लाह की

यह फज़ले खुदा है शाकिर कैसे हो बयां
दुनिया में हमने पाई है उल्फत वली अल्लाह की

- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

जो मदीना हम भी जाएं...

जो मदीना हम भी जाएं तो कुछ और बात होगी
वहीं ज़िन्दगी बिताएं तो कुछ और बात होगी

कैसे जाऊं मैं मदीना कोई ज़ादे राह नहीं
कोई रास्ता दिखाएं तो कुछ और बात होगी

ये खुदा का फज़ल है जो मदीने आगाया हूं
जो हुज़ूर मान जाएं तो कुछ और बात होगी

ﷺ
मैं गदाए मुस्तफा हूं, वो शहेंशा ए जहां हैं
हो करम की वो अताएं तो कुछ और बात होगी

है साथियों के हमहा खड़ा हूं आजिज़ी से
कोई तन्हा चोढ़ जाएं तो कुछ और बात होगी

है यही आरूज़ू ए शाकिर रहूं बन के मैं तुम्हारा
मुझे अपना वो बनाएं तो कुछ और बात होगी

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

मेरी जुस्तुजू है दायारे मदीना

मेरी जुस्तुजू है दायारे मदीना
खुदाया दिखादे बहारे मदीना

सरे ख़म किए मैं चला जा रहा हूं
मेरी आंखों में है खुमारे मदीना

ना पूछो मेरी बेखुदी का आलम
मैं हूं जानो दिल से निसारे मदीना

अगर कोई पूछे ये चेहरे पे क्या है
मसर्रत में केह दूं गा गुबारे मदीना

दिलो जां को तस्किं उस वक्त होगी
जो बुलाएंगे हम को ताजदारे मदीना

हम एहले सुनन हैं इश्क़े नबी में शाकिर
अकीदत से चूमेंगे वो खारे मदीना

- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

सरकारे दो-जहां ﷺ को ये सलाम है हमारा

सरकारे दो-जहां ﷺ को ये सलाम है हमारा
रेहमते दो-जहां ﷺ को ये पयाम है हमारा

हूं कतार में खड़ा सर को झुकाए अपने
लबें-नाज़मीं से केह दें, मैं गुलाम हूं तुम्हारा

शम्सू-दुहा तुम्हीं हो, खैर्-ल-वरा तुम्ही हो
दोनों जहां की जां हो, वो नाम है तुम्हरा

मुख्तारे-कुल को रब ने दीदारे-कुल नवाजा
कोई पा सका ना एसा, वो मकाम है तुम्हारा

अंदाजे गुफ्तुगु जो तुमको अता हुई है
दिल में उतर गया है वो कलाम है तुम्हारा

इश्क़े मुहम्मदी ﷺ ही अल्लाह की रजा है
मिन-जानिबे खुदा से ये पैग़ाम है तुम्हारा

"रब्बे-हब्ली उम्मती" पढ़ते हो तुम हमेशा
उम्मत पे मेरे आका ﷺ ये इनाम है तुम्हारा

तलवे-मुबारका में कितने वरम हुए हैं !
कोई कर सका ना ऐसा वो कयाम है तुम्हारा

अक्सा में आगे बढ़कर तुमने की इमामत
फरमाया जिब्रायिल ने, ये इमाम है तुम्हारा

बख़्शीश है उसकी लाज़िम जो गुलामे मुस्तफा ﷺ हो
फरमाया मेरे रब ने ये निज़ाम है हमारा

शाकिर कलामे बख़्शीश पढ़कर उन्हें सुनाऊं
जब तक रहूं में ज़िंदा हो काम ये हमारा

\- - -

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

था जिस्का इंतेजा़र वो माहे-रमज़ां आगया

था जिस्का इंतेजा़र वो माहे-रमज़ां आगया
मेरी ओर तुम्हारी बख़्शीश का सामां आगया

खाली दामन, झोलियां, उम्मीदें हैं वाबस्ता
रेहमते-परवर दीगार लेकर वो माहे-रमज़ां आगया

मकाने-दिल में इक रौशनी सी छा गई
नेकियों की शमा जलाने वो माहे-रमज़ां आगया

करलो जितनी नेकिया वक्त बोहत कम है
नेमते-परवर दीगार बांटने वो माहे-रमज़ां आगया

हमें तो चाहिए रज़ा शहेंशाहे दो जहां की
सुन्नते-सरकार ﷺ अदा करने वो माहे-रमज़ां आगया

ग़फ्लत की चादर हटा दो अब अपने चेहरे से
बन्दों को रब से मिलाने वो माहे-रमज़ां आगया

क्या अब भी **शाकिर** सरे-तास्लीम ख़म ना होगा
गुनाहों को बख्ष्वाने वो माहे-रमज़ां आगया

\- - -
फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

प्यारे आका ﷺ की प्यारी अदाएं

प्यारे आका ﷺ की प्यारी अदाएं
जिस्के दिल में समाई हुई है
सुन्नतों का वो पैकर बना है
बात उसकी बनाई हुई है

मुझको बिन मांगे सब कुछ मिला है
प्यारे आका ﷺ ने सब कुछ दिया है
ये तो लुत्फ़े करम है उन्हीं का
कैसी मेरी बढ़ाई हुई है

मेरे आका ﷺ को सबकी ख़बर है
देखो कैसी मुबारक नज़र है
जब भी मैंने है उनको पुकारा
दस्ते रेहमत ही छाई हुई है



गौसो ख्वाजा का दामन है थामा
हक़ कहां है ये हम ने है जाना
ये तुम्हारे ही नूरे नज़र हैं
शमा हक़ वो जलाई हुई है

मेरे आका ﷺ यही इल्तेजा है
खैर हो मोमिनों का दुआ है
अपने **शाकिर** पे हो नज़रे रेहमत
सबकी बिगड़ी बनाई हुई है

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

या बंदा नवाज़

--- फयाज़ मुहम्मद शाकिर

नज़रे करम हो आले रसूल या बंदा नवाज़
सरे खम किए खड़ा हूं या बंदा नवाज़

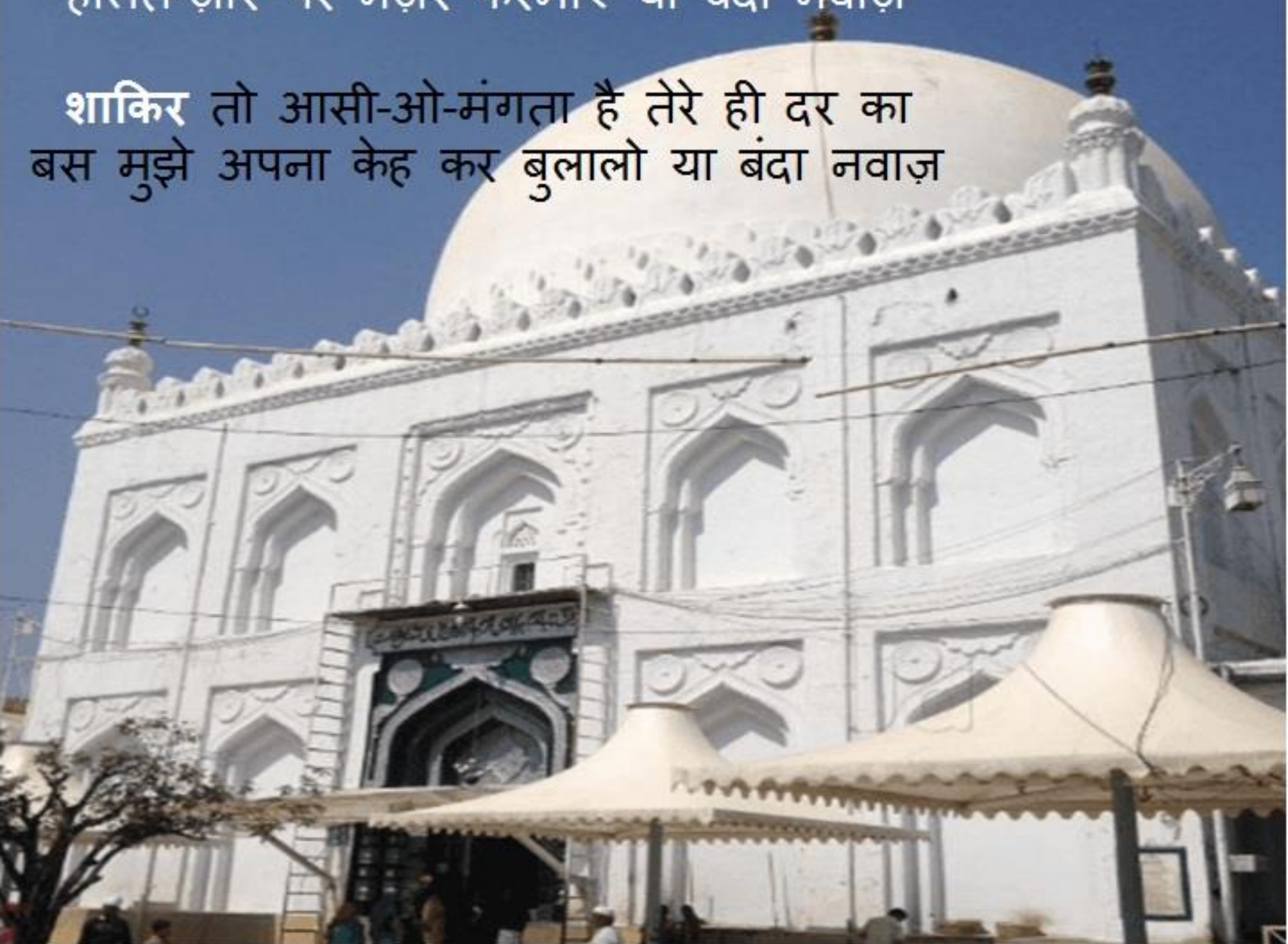
वास्ता मुर्शिदे हक चिरागे नसीर का
दामन पसारे मुन्तज़िर हूं या बंदा नवाज़

महफ़िले तसव्वुफ में आज भी शान से
रौशन है तुम्हारी ही शमा या बंदा नवाज़

इल्मो इरफां का खज़ाना बट रहा है आज भी
हमको भी थोड़ा सा अता हो या बंदा नवाज़

ख़स्ता दर है उम्मत परेशां सारी दुनिया में
हालते-ज़ार पर नज़र फरमाएं या बंदा नवाज़

शाकिर तो आसी-ओ-मंगता है तेरे ही दर का
बस मुझे अपना केह कर बुलालो या बंदा नवाज़



मेरे दिल में तेरी उल्फत शाहा ﷺ

मेरे दिल में तेरी उल्फत शाहा
है तुझी से मेरी ज़ीनत शाहा

खाई रब ने रूखे अन्वर की कसम
ऐसी प्यारी तेरी सूरत शाहा

तेरे सदके से है ज़िंदा दुनिया
दोनों आलम की हो रेहमत शाहा

मिली दुनिया में जो मुझको इज़्ज़त
मेरी तुझसे जो है निस्बत शाहा

सारे आलम में है जल्वा तेरा
कैसे हो बयां तेरी मिदहत शाहा

जो फिज़ाओं में है आवाज़े-अजां
है मेरे रब की ये कुद्रत शाहा

सारे बन्दों को दिखाएगा रब
रोज़े मेहशर तेरी अज़्मत शाहा

मैं तो आसी हूं तुम्हारे दर का
मुझको मिल जाती है नेमत शाहा

सारी उम्मत है परेशां देखो
कैसे दूर होगी मुसीबत शाहा

दस्ते-शफ़्क़त जो अता हो **शाकिर** !
मैं करूं दिन की खिदमत शाहा

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



सफ़रे हज का इरादा किया है हिस्सा-१

सफ़रे मक्का

जिस घड़ी केलिए मुन्तज़िर थे
लम्हा लम्हा यही सोचते थे
सफ़रे हज का इरादा किया है
देखो सूए-हरम जा रहें हैं

ये नूरानी काफिले देखो
कैसे सुए-हरम जा रहें हैं
इक सदाए लब्बैक पर हैं
कैसे सुए-हरम जा रहें हैं

खा़ने काबा की चौखट पे जाके
अपने आंसु से दामन भिगोके
रोते रोते तवाफ करूंगा
देखो सूए-हरम जा रहें हैं

उम्र मेरी गुनाहों में गुज़री
कैसे होगी वहां की हुजुरी
हर ख़ताओं पे नादीम हूँ मौला
फिर भी सूए-हरम जा रहें हैं

मीना अर्फा़ की फिज़ाओं से
प्यारी प्यारी हसीं वादियों से
मुज़दालिफा सरे ख़म चलूंगा
देखो सूए-हरम जा रहें हैं

कोहे सफा से मारवाह तक
अपनी उम्मीदों की इन्तेहा तक
दौड़ता चल्ता फिरता रहूंगा
देखो सूए-हरम जा रहें हैं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



सफ़रे हज का इरादा किया है हिस्सा-२

सफरे-मदीना

जब सवारी चलेगी तैयबा
कैसे हो नफ्स को मेरी ज़ैबा
नंगे पांव वहां पर चलूंगा
देखो सूए-करम जा रहें हैं

रोज़े अथहर की जलियों को
बागे-जन्नत की उन क्यारियों को
हां, इशारों से उनको चुमुंगा
देखो सूए-करम जा रहें हैं

है मदीने का सारा कोना
रहमतों बरकतों का भिछोना
वास्ता पंजतन का अता हो
देखो सूए-करम जा रहें हैं

प्यारे आक़ा के कदमों में जाकर
दिल की सुनी ज़मीं को झुका कर
बा-अदब सर झुकाए रहूंगा
देखो सूए-करम जा रहें हैं

गुंबदे-खज़रा का हो नज़ारा
आक़ा हो जाए बस इक इशारा
झूम झूम सलाम पढ़ूंगा
देखो सूए-करम जा रहें हैं

काश एहराम अपना कफ़न हो
अल्लाह अल्लाह वहीं हम दफन हो
हम्को मिल जाए खाके-मदीना
देखो सूए-करम जा रहें हैं

में शरम से हूं पानी पानी
कैसे गुज़री है मेरी जवानी
ले गुनाहों की गठरी शाकिर
देखो सूए-करम जा रहें हैं

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

मुहम्मद ﷺ की रज़ा ही खुदा की रजा़ है
यही शाने-मोमिन ओर अख़िरत की जजा़ है

लिल्हा मरने से पेहले हम भी देखें
कित्नी प्यारी वो मदीने की फिजा़ है

कोई नहीं उसके मद्दे-मुक़ाबिल यहां
कित्ना हसीं वो शहरे मुर्तजा़ है

ईलाही दो लुक्मे अता हो इस फ़कीर को
क्या ही खूब वो मदीने की गिजा़ है

जिस्ने छोड़ा दामने-मुस्तफा ﷺ यहां पर
उस्के मुकद्दर में लिखी यकी़नन सजा़ है

शाकिर कलामे-बख़्शीश कैसे उन्हें सुनाऊं
उफ़, गुनाहों से आलुदा ये मेरे आजा़ है

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

मुहम्मद ﷺ
की रज़ा ही
खुदा की
रजा़ है

सूए तैबा जा ना सके हम

सूए तैबा जा ना सके हम हालत ही कुछ ऐसी थी
फास्लों को मिटा ना सके हम क़ीमत हीं कुछ ऐसी थी

सारी उम्र हम ने सोचा कैसे जाएंगे तैबा ?
आंखों में था सपना वहीं का उल्फत ही कुछ ऐसी थी

खाली दामन खाली झोली उम्मीदें हैं वाबस्ता
क्यूं ना करम फर्माते हम पर निस्बात ही कुछ ऐसी थी

रेहमते-आलम सारे जहां के तुम ही तो हो या शाहे-उमम ﷺ
जो कुछ पाया दस्ते-करम से रेहमत ही कुछ ऐसी थी

तस्वीरों में ही देखा हूं नज़रे-करम हो या शाहा ﷺ
जल्दी बुलवाएंगे शाकिर को चाहत ही कुछ ऐसी थी

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर



نواسۂ رسول، جگرگوشۂ بتول، راکب دوش مصطفی ﷺ
حضرت سیّدنا امام عالی مقام امام حسین رضی اللہ تعالی عنہ

अज़्मत मेरे हुसैन की

منقبت امام حسین رضی اللہ عنہ

अज़्मत मेरे हुसैन की, रुत्बा मेरे हुसैन का
सदियों से चल रहा है सिक्का मेरे हुसैन का

दामन को अपने भर लो झोली को अपने भर लो
दुनिया में बट रहा है सदक़ा मेरे हुसैन का

पैदा हुए हुसैन तो क्या खूब था नज़ारा
आगोषे-मुस्तफा ﷺ में चेहरा मेरे हुसैन का

दिने-नबी की खा़तिर जब भी ज़बान खोली
दिल में उतर गया है खुत्बा मेरे हुसैन का

मैदाने-कर्बला में क्या क्या सितम हुए थे
नस्लों को तुम बताना क़िस्सा मेरे हुसैन का

बन कर शहिदे-आज़म कर्बल से चल दिए वो
दुनिया में अब भी है वो साया मेरे हुसैन का

सारे जहां से रिश्ता छूटे तो छूट जाए !
लिल्लाह, कभी ना छूटे रिश्ता मेरे हुसैन का

शाहो-गदा खड़े हैं दस्ते-हुज़ूर सारे
कैसे चमक रहा है रौजा़ मेरे हुसैन का

लाखों यजीदी आएं सर ना कभी झुकना
सबके दिलों में हो जज़्बा मेरे हुसैन का

शाकिर कलामे-बख़्शीश पढ़ कर उन्हें सुनाऊं
चलता रहे लबों पर नग़मा मेरे हुसैन का

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

: इस्तेग़ासा :
मेरे गौसे-आज़म निगाहें करम हो

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

मेरे गौसे-आज़म निगाहें करम हो
खुदा की अता हो, निगाहें करम हो
मेरे गौसे-आज़म निगाहें करम हो

ज़माने की ठोकर बहोत खा चुका हूं
के तन्हा खड़ा हूं, निगाहें करम हो
मेरे गौसे-आज़म निगाहें करम हो

कासा मुरादों का लेकर चला हूं
सवाली हू तेरा, निगाहें करम हो
मेरे गौसे-आज़म निगाहें करम हो

खातूने-जन्नत का सदक़ा अता हो
ऐ हसनी हुसैनी निगाहें करम हो
मेरे गौसे-आज़म निगाहें करम हो

तेरे दर का हूं मैं अदना भिकारी
है तू शाहे-जिलां, निगाहें करम हो
मेरे गौसे-आज़म निगाहें करम हो

के मैदान मेहशर में रुसवा ना हो हम
हो दामन तुम्हारा, निगाहें करम हो
मेरे गौसे-आज़म निगाहें करम हो

शाकिरे-नूरी की यही इल्तेजा है
तेरी दस्ते शफक़त हो निगाहें करम हो
मेरे गौसे-आज़म निगाहें करम हो

غوث الاعظم
محی الدین محبوب سبحانی غوث الثقلین جیلانی
رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ
اولیاء تو پرہیزگار ہی ہیں
(الانفال:34)

علیٰ مُحاولۃِ اِصلاحِ نفسی و جمیعِ اُناسِ العالم اِن شاء اللہ عزوجل

मंन्कबत दर्शाने हुजुर पिराने पिर दस्तगीर गौसुल आज़म सय्यदना अबू मुहम्मद मुहिद्दीन शेख़ अब्दुल का़दिर जिलानी (रेहमतुल्लाह अलैह)

शबो-रोज़ तेरा करम गौसे आज़म
हमे तो मिला है करम गौसे आज़म

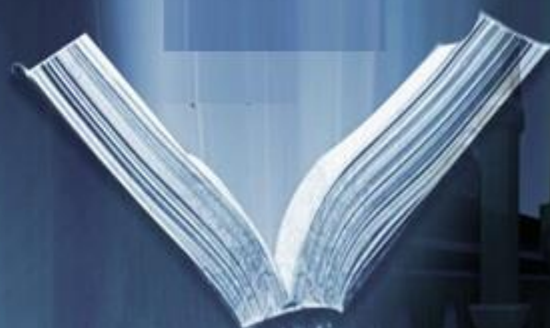
चला जाऊंगा मैं तो दुनिया से लेकिन
मेरे हाथ में होगा अलम गौसे आज़म

बयां हम से हो कैसे तौसीफ़ तेरी
है गर्दने-औलिया पर क़दम गौसे आज़म

गुनेहगार हूं मैं ख़ता-वार हूं मैं
फिर भी तेरा हूं करम गौसे आज़म

मेरे सारे ज़ख्मों की इक दवा है
के मिल जाए मुझको मरहम गौसे आज़म

शाकिर तुम्हारा है यही इल्तेजा है
लिखूं और पढ़ूं में नज़म गौसे आज़म



غوث الاعظم
محی الدین محبوبِ سبحانی غوث الثقلین جیلانی
رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

Designed by I.T. Majlis of Dawat-e-Islami
www.dawateislami.net

फयाज़ मुहम्मद - शाकिर

ﷺ

मुहम्मद ना होते कुछ भी ना होता

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

ना ये अर्श होता ना वो फर्श होता
मुहम्मद ना होते कुछ भी ना होता

खुदा की क़सम ये सच बात मानो
मै भी ना होता, तू भी ना होता
मुहम्मद ना होते कुछ भी ना होता

मुहम्मद बिना ये दुनिया ना चलती
सायाए-रेहमत तेरा गर ना होता
मुहम्मद ना होते कुछ भी ना होता

चला जा रहा हूं मैं जानिबे तैयबा
अगर उनका मुझ पे करम ही ना होता
मुहम्मद ना होते कुछ भी ना होता

सोचो ज़रा क्या अंजाम होता !
अगर उनका तू शैदा ना होता
मुहम्मद ना होते कुछ भी ना होता

ये सब तो उन्हीं का लुत्फ़े करम है
मै शाकिर ना होता तू नूरी ना होता
मुहम्मद ना होते कुछ भी ना होता




मंन्कबत: मक़ामे ख़लीफाएँ अव्वल सय्यदना अबू बक्र सिद्दिक (रदियल्ला अन्हु)



मक़ामे बू-बकर क्या है मुहम्मद ﷺ मुस्तफा जाने
नबुवत के सिवा सब हैं मुहम्मद मुस्तफा जाने

बिना सोचे बिना समझे नबी को ऐसे हक़ जाना
सदाकत उनकी जामे है मुहम्मद का खुदा जाने

मुहाफिज़ बन के हर लम्हा उन्की हिफाज़त की
के रुत्बा यारे गा़र का मुहम्मद मुस्तफा जाने

नबी के पेहलुए अक़दस में लेटे हैं वो आज भी
के उन्की शाने अज़्मत को मुहम्मद मुस्तफा जाने

ज़हे क़िस्मत हमारी थी के हं पोहुँचे मदीने में
गुलाम कैसे आएंगे मुहम्मदे मुस्तफा जाने

खुदाया तेरे शाकिर की बस इतनी से तमन्ना है
सलामे-आजिज़ाना को मुहम्मद मुस्तफा जाने

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

खुदाया करम हो

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

मै बन्दा तेरा हूं खुदाया करम हो
सवाली तेरा हूं खुदाया करम हो

नहीं कोई हुसने अमल पास मेरे
गुलामे नबी हूं खुदाया करम हो

ये खौ़फ-वबा ने दुनिया को घेरा
अमां चाहता हूं खुदाया करम हो

मेरा तो बस इक तू ही सहारा
में बे-बस खड़ा हूं खुदाया करम हो

रहूं में हमेशा तेरी पनाह में
कुछ ऐसी अता हो खुदाया करम हो

तेरे खौ़फ में गुज़रे दिन रात मेरे
रहूं बस तेरा में खुदाया करम हो

में दुनिया की उल्फत में डूबा हुआ हूं
अब उल्फत तेरी हो खुदाया करम हो

गुनाहों की गठरी लिए में खड़ा हूं
तू बख़्श दे मुझे ऐ खुदाया करम हो

गुनाहों के दलदल में फंसता रहा में
चला सीधा रस्ता खुदाया करम हो

ये गन्दी सियासत ये गन्दे खिलाड़ी
में आजिज़ यहां हूं खुदाया करम हो

में शाकिर तेरा इक बे-बस गदा हूं
सदक़ा नबी का हो खुदाया करम हो



سبحن الذی اسری بعبدہ لیلا من المسجد الحرام الی المسجد الاقصی





معراج النبی ﷺ

वाकेआ सफरे मेराज-उन-नबी ﷺ

आज अर्श आज़म सजाया जा रहा है
जशने मेराज-उन-नबी मनाया जा रहा है

खज़ाने बट रहे हैं रब्बुल आलामिन के
सदका रेहमते-आलम लुटाया जा रहा है

पेहलू में खड़े हैं वो अजीजी से
जिबरील को दरबारे-अदब सिखाया जा रहा है

क्या शानो-अज़्मत और नबी की सवारी
पुश्ते बुराक़ पे उन्हें बिठाया जा रहा है

सफे-अक़्सा में अंबिया खड़े हैं लेकिन
इमामूल-अंबिया से इमामत किया जा रहा है

सुऐ बुलंदी जब चल पड़ी उनकी सवारी
मंज़िल ब मंज़िल कलामे-अंबिया हुआ जा रहा है

सिद्राह पे आकर कहने लगे ये जीब्रीले-अमिं
अब आगे हुज़ूर को तन्हा बुलाया जा रहा है

क्या खूब नज़ारा है काबा कौसैन में
अब सारे हिजाबों को हटाया जा रहा है

तोहफाए-खुदा जो मिला उम्मते-मुस्तफा को
अस्सलातो मेराजुल मोमिन बताया जा रहा है

सज्दए खुदावंदी में ये राज़ है ये शाकिर
के उम्मत के गुनाहों को मिटाया जा रहा है

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

अस्सलातु वस्सलाम

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

रोज़ो शब हो विर्दे-ज़ुबां, अस्सलातु वस्सलाम
सारे आलम की है जां, अस्सलातु वस्सलाम

मैंने दिल से है पढ़ा अपने आक़ा ﷺ पर दुरूद
मिल गई है हिफ्ज़ौ-अमां, अस्सलातु वस्सलाम

वो मक़ामो-मंजिलत तुझको रब ने है दिया
लफ़्ज़ों में हो क्या बयां, अस्सलातु वस्सलाम

मुझको अपना या नबी ﷺ केह कर बुला लिज्ये
में तड़पता हूं यहां, अस्सलातु वस्सलाम

फ़िक्र की क्या बात है गर्चा मदीना दूर है
दिल तो मेरा है वहां, अस्सलातु वस्सलाम

में कहां जाऊं शहा ﷺ दर तुम्हारा छोड़ कर
तू ही मेरा कौनो-मकां अस्सलातु वस्सलाम

तू ही मेरी तिशनगी तू ही मेरी आस है
ऐ मेरे सरकारे-जहां ﷺ अस्सलातु वस्सलाम

रोज़े मेहशर या नबी ﷺ करना शफा'अत तुम वहां
ऐ शफीकौ-मेहरबां, अस्सलातु वस्सलाम

अब ग़ुलामि की सनद आक़ा ﷺ अता कर दीजिए
तू हीं मेरा हुक्मे-फर्मां, अस्सलातु वस्सलाम

बस यही है आरज़ू ख़ाके-मदीना हो अता
दफ़्ने-बक़ी हो जाऊं वहां, अस्सलातु वस्सलाम

मेरी शामे-ज़िन्दगी तेरे ही दर पे हो फना
मर के जीते है जहां, अस्सलातु वस्सलाम

काश मिल जाए हमें तेरा दामाने-करम
आसी है शाकिर यहां, अस्सलातु वस्सलाम



या इलाही तेरा नाम लेकर

या इलाही तेरा नाम लेकर में ये दिल से दुआ कर रहा हूं
तेरा फज़लो-करम चाहता हूं बस यही इल्तेजा कर रहा हूं

हर ख़ताओं पे नादिम हूं मौला, जिंदगानी गुनाहों में गुज़री
अब तेरे दर पे सर को झुका के तेरी हम्दो-सना कर रहा हूं

है ये वादा मेरा या इलाही, तेरे आगे ही सर को झुकना
ऐ खुदाया करम तू फरमा, अपना वादा वफा कर कर रहा हूं

या इलाही गुनेहगार हूं मैं, तेरी रेहमत का मुहताज हूं मैं
है वसिला गौसुल-वरा को ... है वसिला ख़्वाजा पिया को (२)
... अपना दामन में प्हैला रहा हूं

मेरे आका ﷺ की नज़रें करम है, शुक्र कैसे अदा होगा मुझसे
इस ज़ुबाने-हाल से में तो अब खुदा ही खुदा कर रहा हूं

ज़िन्दगी का ये सूरज तो शाकिर लम्हा लम्हा गुरूब हो रहा है
ख़तीमा-बिल-खैर ईमां हो, तुझ से ये ही दुआ कर रहा हूं

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

इस्तेगा़सा
हम पे नज़रे करम हो खुदारा...

आमिना के नूरे नज़र हो,
हम पे नज़रे करम हो खुदारा
ऐ हलिमा के राज-दुलारे,
हम पे नज़रे करम हो खुदारा

मेरे आका़ ﷺ शाहे-ज़मन हो,
सारे आलम का चैनो-अमन हो
ऐ रसूले-पाक ﷺ हमारे,
हम पे नज़रे करम हो खुदारा

इश्क़ तेरा ही मेरी जां है,
तुझ से वाबस्ता ये ईमां है
हम तो तेरे ही शैदा हुए हैं,
हम पे नज़रे करम हो खुदारा

ये करम की तुम्हारी नज़र है,
मेरे आका़ ﷺ को सबकी ख़बर है
हम परेशां हैं बिगड़ी बनादो,
हम पे नज़रे करम हो खुदारा

उस वक्त ना होगा कोई रेहबर,
लाज रखना हमारी रोज़े मेहशर
आका़ ﷺ तुम शफा-अत करना,
प्यारे आका़ ﷺ हिफाज़त करना (२)
हम पे नज़रे करम हो खुदारा

वास्ता फातिमा ज़ोहरा का,
वास्ता तुमको मौला अली का
अपने शाकिर को तैयबा बुलालो,
हम पे नज़रे करम हो खुदारा

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)





: मन्क़बत :

मक़ामे अताए हुज़ूर मुफ्तिए आज़मे हिन्द, दाइए कबीर अल्लामा मौलाना शाकिर अली रज़वी नुरी दामत बर्कातुहुम आ़लिया

मदीने की उल्फत में हम को जगाया
इश्के-नबी ﷺ क्या है हम को सिखाया
वो शाकिरे नूरी सब से जुदा हैं
सफे-आला हज़रत में हम को बिठाया

ये सायाए नूरी रहे ज़िन्दगी भर
ये फैज़ाने नूरी मिले ज़िन्दगी भर
अताए हुज़ूरी का फ़ैजे करम है
गुनाहों की गर्मी से हम को बचाया

न-जाने कहां हम गुम हो गए थे
सरापा गुनाहों में गुम हो गए थे
ये सब कुछ तुम्हारा लुत्फ़े करम है
के ताजे अमामा से हम को सजाया

बातिल के आगे शमशीरे-जन है
अपनों के आगे शिरीं-दहेन है
खुदा की कसम ये सच बात मानो
ये सच झुट क्या है हम को बताया

मुश्किल घड़ी में अकेला ना छोड़ा
के अपने मुरीदों को तन्हा ना छोड़ा
ज़माने के फित्नों से लड़ना सिखाया
के शाकिर ने शाकिर को अपना बनाया

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

सरकारे-मदीना ﷺ

सारे जहां की नेमतें हैं तेरे ही दर से सरकारे-मदीना ﷺ
सदक़ा जो मिल रहा है यहां तेरे ही घर से सरकारे-मदीना ﷺ

ऐ काश दरे पाक पे हो अपनी हाज़री, उल्फत है तुम्हारी
मेरा नसीब भी खुलेगा तेरे ही दर से सरकारे-मदीना ﷺ

मजबुर हूं बेकस हूं ज़माने ने सताया, हम को है रुलाया
सारे ग़मों का आसा है तेरे ही दर से सरकारे-मदीना ﷺ

शाकिर की है ये आरज़ू हो जाए वहीं पर, तैयबा की ज़मीं पर
दो गज़ ज़मीं बकी की मिले तेरे ही दर से सरकारे-मदीना ﷺ

फयाज़ मुहम्मद – शाकिर

इस्तेग़ासा
बुलालो अब मदीने में

ﷺ
मेरे मालिक मेरे आक़ा बुलालो अब मदीने में
तड़प्ता हूं मेरे शाहा ﷺ बुलालो अब मदीने में

सलामे-आजिज़ाना पेश करता हूं यहां से में
बज़ाहीर दूर हूं आक़ा ﷺ बुलालो अब मदीने में

ज़मीं से आस्मां तक तेरी ही हम्दो-सनाएं हैं
करम की मुझ पे हो अता, बुलालो अब मदीने में

तेरे दर का में अदना सा भिकारी हूं मेरे शाहा ﷺ
उम्मीदें तुझ से वाबस्ता, बुलालो अब मदीने में

ख़ुदा जाने के क्या होगा तेरा शाकिर ज़माने में
दिले-मुज़्तर परेशान सा, बुलालो अब मदीने में

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

हुज़ूर ﷺ जान्ते हैं

मेरे नबी मेरे आका हुज़ूर जान्ते हैं
दुरूद किस ने पढ़ा, हुज़ूर जान्ते हैं

तड़प रहा हूं मदीने की हाज़्री के लिए
मेरी तड़प का तकाज़ा, हुज़ूर जान्ते हैं

तेरे ही दर की हुज़ूरी मेरी क़िस्मत
मेरे सफर का इरादा, हुज़ूर जान्ते हैं

मुझे ग़रज़ ही नहीं तेरा क्या है गुमां
मेरा तो है ये अकिदा, हुज़ूर जान्ते हैं

कहूं ज़बां से भला क्या ऐ मेरे शाहा
मैं चाहता हूं क्या क्या, हुज़ूर जान्ते हैं

तेरी रज़ा में खुदा की है रज़ा शामिल
है मेरा ये ही वजीफा, हुज़ूर जान्ते हैं

कोई ये पूछे के **"शाकिर"** तुझे पता क्या है
कहूंगा बस मैं तो इत्ना, हुज़ूर जान्ते हैं

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

شہنشاہِ ہند عطائے رسول خواجۂ خواجگان حضرت سیدنا معین الدین حسن سنجری سرکار غریب نواز رضی اللہ تعالیٰ عنہ

RAZVINETWORK.NET

ذکرِ سُلطان الہند

ज़िक्रे सुल्ताने-हिन्द

ज़िक्रे सुल्ताने-हिन्द की है मेहफ़िल सजी
ज़िक्रे ख़्वाजा पिया की है मेहफ़िल सजी
चाहने वाले सब तो हैं आए हुए
है खुदा का फज़ल मेहफ़िल पाक पर (२)
बा-अदब हैं जो सर को झुकाए हुए

हम को जो कुछ मिला तेरे दर से मिला
क्या कहूं मेरे ख़्वाजा के क्या क्या मिला
है मेरा ये नसिबा के तू ही मिला (२)
तेरी उल्फत जो दिल में छुपाए हुए

है मदीने का साया अजमेर में
दिल मचलता है जाने को अजमेर में
तू नवासा रसूले-बर-हक़्क मुईन (२)
तेरी चौखट पे दिल को झुकाए हुए

तेरे क़दमों में शाकिर है आया हुआ
ये मुरादों का कासा है लाया हुआ
इक निगाहें करम मेरे ख़्वाजा पिया (२)
वास्ता पंजतन का है लाए हुए

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

सल्ल-ल्लाहु अला मुहम्मद ﷺ



सल्ल-ल्लाहु अला मुहम्मद ﷺ
खुदा ने तुझ को बनाया ऐसा, के तेरे जैसा निशां कहां है (२)
तू जाने आलम है मेरे शाहा (२) तेरा करम तो कहां कहां है

सल्ल-ल्लाहु अला मुहम्मद ﷺ
ज़बां से अपनी बयां करे क्या, तेरा तो जिक्र है सब से ऊंचा (२)
है अर्शे-उला पे तेरा चर्चा (२) जमीं पे ऐसा समां कहां है

सल्ल-ल्लाहु अला मुहम्मद ﷺ
ए मेरे प्यारे रसूले अरबी, कई मुरादें लिए खड़ा हूं (२)
तेरे करम की क्या बात आका (२) तेरे करम का बयां कहां है

सल्ल-ल्लाहु अला मुहम्मद ﷺ
शुमाल तेरा जुनूब तेरा, ये शर्क़ तेरा ये गर्ब तेरा (२)
हर इक जानिब तेरी हुकूमत (२) तेरा ही कल्मा हर इक ज़बां है

सल्ल-ल्लाहु अला मुहम्मद ﷺ
तू है सरापा नूरे मुजस्सम, तेरा घराना है नूरे पैकर (२)
तेरे ही जल्वों से है मुनव्वर (२) ये दोनो आलम यहां वहां है

सल्ल-ल्लाहु अला मुहम्मद ﷺ
बुलालो मुझ को मदीने आका , के तेरा शाकिर तड़प रहा है (२)
क़रार होगा तेरे ही दर से (२) सुकून मेरा यहां कहां है

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

सरकार आ गए हैं





Milad Un-Nabi
MUHAMMAD

(फयाज़ मुहम्मद - शाकिर)

सब मरह्-बा पुकारो सरकार आ गए हैं
दिल से उन्हें पुकारो सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

नूरे-मुहम्मदी ही शक्ले-बशर मे आया
वो आमिना के घर में सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

"रब्बे-हबलि-उम्मती" पढ़ते हुए वो आए
उम्मत के वो शफ़ी हैं सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

मिलादे-मुस्तफा है खुशियाँ सभी मनाओ
दीवारो-दर सजाओ सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

सदके नबी के रब ने पैदा किया जहान को
आलम मे नूर फैला सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

था चार-सु अंधेरा ग़मगिन था ज़माना
ग़म-ख्वार देखो आए सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

है शान मे निराला है शान मे वो आला
बड़ी शान वाले आक़ा सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

वो मालिक जहाँ हैं खालिक ने ये कहा है
लेकर खज़ाने रब के सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

क्यूँ घमज़दा खड़ा है क्यूँ फिक्र मे पड़ा है
है ग़म-ज़ैदों के आक़ा सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

दस्ते-करम से उनके सब कुछ हमें मिलेगा
वो भिक देने वाले सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

नाफीज़ हुई हुकूमत शरियत वो ले के आए
रेहमत वो बन के आए सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

दो-ग़ज ज़मीं के नीचे घ़बराना कैसे शाकिर
मुझको बचाने क़ब्र में सरकार आ गए हैं
अल्लाहुम्मा सल्ले अला
सयईदिना मुहम्मदिन

ﷺ ए रसूले पाक फिदा तुझ पे जानो तन मेरा

ए रसूले पाक फिदा तुझ पे जानो तन मेरा
है तेरे ही फज़लो करम घर का ये सहेन मेरा

मैं गुलामे-ख्वाजा हूं , मैं गुलामे-अहमद रज़ा
इनसे ही तो रौशने है प्यारा ये वतन मेरा

सारी अज़्मतें हैं तेरी , सारी रिफ्अतें हैं तेरी
कौन कर सकेगा बयां लफ्जों में सुख़न तेरा

जित्ना भी नज़ारा करूं , जित्ना भी पुकारा करूं
फिर भी दिल नही भरता , ना कभी ये मन मेरा

आका, तेरी नज़रे-करम काश हम पे हो जाए
बेड़ा पार होजाएगा और मिलेगा दामन तेरा

दूर हूं मदीना से कोई ग़म नही शाकिर !
चार-सु निगाहों में है जल्वा-ए-हसन तेरा

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

आक़ा की सना-ख़्वानी दर-अस्ल ईबादत है

आक़ा की सना ख़्वानी दर-अस्ल ईबादत है
आक़ा ने जो फरमाया दर-अस्ल शरीयत है

इक बात ज़रा सुन लो ये दरसे हिदायत है
आक़ा की मोहब्बत ही दर-अस्ल मोहब्बत है

इक बार मदीने में बुलवा लीजिए आक़ा
गर मौत ही आजाए दर-अस्ल ये क़िस्मत है

क्या होगा करम उनका मैदाने-मेहशर में
बख्शाएंगे आक़ा ही दर-अस्ल ये निस्बत है

आक़ा मैं तुम्हारा हूं बस इत्ना सा केह दो
हो जाए करम मुझ पर दर-अस्ल ये हसरत है

इस दौरे-ख़िजां में कोई भी नही मेरा
बस तेरी गुलामी हो दर-अस्ल ये चाहत है

अव्वल से आख़िर तक बस तेरा ही चर्चा
तेरे ज़िक्र में ही आक़ा दर-अस्ल ये लज़्ज़त है

लिल्लाह मदीने में **शाकिर** की मौत आए
देहलीजे-मदीना ही दर-अस्ल तो जन्नत है

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

ऐ रसूले-पाक ﷺ तेरे दर पे हैं ज़ारो-क़तार

ऐ रसूले-पाक ﷺ तेरे दर पे हैं ज़ारो-क़तार
तु ही मेरी आरज़ू , तु ही मेरा शहरे वक़ार

सारी दुनिया ने शहा ﷺ तन्हा मुझे छोड़ दिया
इक तेरा ही आसरा है, ऐ रसूले ताज-दार ﷺ

हर तरफ फैली हुई हैं रंजो-ग़म की मेहफ़िलें
सिर्फ तेरे दर पे मिलता है मुझे दिल का क़रार

ठोकरें खा कर शहा ﷺ मै क्या से क्या देखो हुआ
दस्ते-शफक़त से मिटेगी ये मेरी गर्दो-गुबार

या रसूलल्लाह ﷺ मुझ पे इक नज़र फरमाइये
सर झुका के बा-अदब रोते हैं हम तो ज़ार ज़ार

शाकिरे-नूरी की आक़ा इतनी सी है आरज़ू
रूह निकले तेरे दर पे और रहूँ मैं अश्कबार

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

ज़मीं रो रही है फलक रो रहा है
ये मस्जिदे-अक़्सा में क्या हो रहा है

सारे ज़माने ने ये देखा नज़ारा
वो चैनो-सुकूँ उनका फना हो रहा है
ये मस्जिदे-अक़्सा में क्या हो रहा है

बयां हम से हो कैसे हालात उनके
वो आँखों से आँसू जुदा हो रहा है
ये मस्जिदे-अक़्सा में क्या हो रहा है

खुदा का ये घर है, इस्को न भूलो
वो मेहराबो-मिम्बर ख़फा हो रहा है
ये मस्जिदे-अक़्सा में क्या हो रहा है

शाकिर ने हाथों को फैला लिया है
अब आँखों से आँसू नुमा हो रहा है
ये मस्जिदे-अक़्सा में क्या हो रहा है

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)



ये मस्जिदे-अक़्सा में क्या हो रहा है



अब तो बस एक ही धुन है के मदीना देखूं



शेहरे मेहबूब के जलवों का मैं मदीना देखूं
खाके तैबा का हो सज्दा और मदीना देखूं
अब तो बस एक ही धुन है के मदीना देखूं

है तसववुर में इलाही शहरे तैबा का सफर ही
ऐ खुदा तेरे करम से मैं मदीना देखूं
अब तो बस एक ही धुन है के मदीना देखूं

है यही मेरी तमन्ना ऐ शहेंशा हे मदीना
सब्ज़ गुम्बद का नजारा और मदीना देखूं
अब तो बस एक ही धुन है के मदीना देखूं

सफे-हस्ती से न मिट जाए कहीं ज़ात ये मेरी
काश मरने से हो पहले मैं मदीना देखूं
अब तो बस एक ही धुन है के मदीना देखूं

काश तैबा की हो सेहरी साथ इफ्तारे हरम हो
माहे रमज़ां का समां हो और मदीना देखूं
अब तो बस एक ही धुन है के मदीना देखूं

कैसे जाऊँ मैं मदीना है तरसती ये निगाहें
है तमन्ना ए हुज़ूरी और मदीना देखूं
अब तो बस एक ही धुन है के मदीना देखूं

काफला देखो चला है शहरे तैबा की तरफ वो
साथ शाकिर को भी ले लो के मदीना देखूं
अब तो बस एक ही धुन है के मदीना देखूं

(फयाज़ मुहम्मद – शाकिर)

सलामे-आजिज़ाना




या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवा तुला अलैका

ए शाहेंशा-हे मदीना, बुलवालो अब तो मदीना
जल रहा मेरा ये सिना, मदनी मदीने वाले
या नबी सलाम अलैका ...

मिल जाए कोई बहाना, हो सलामे-आजिज़ाना
और पढ़ूं ये वालिहाना, मदनी मदीने वाले
या नबी सलाम अलैका ...

आप हैं मौला के प्यारे, आमिना के हैं दुलारे
रोजो-शब यही पुकारे, मदनी मदीने वाले
या नबी सलाम अलैका ...

आप हैं शाहे दो-आलम, आप हैं फख्रे दो-आलम
आप हैं सरदारे आजम, मदनी मदीने वाले
या नबी सलाम अलैका ...

मैं तेरे दर का गदा हूं , तेरे नाम पे फ़िदा हूं
मैं कहां तुझसे जुदा हूं, मदनी मदीने वाले
या नबी सलाम अलैका ...

ख़ातूने-जन्नत का सदक़ा, हज़रते-अली का सदक़ा
आप के प्यारों का सदक़ा, मदनी मदीने वाले
या नबी सलाम अलैका ...

शाकिरे-नूरी की आक़ा इत्नी सी ये इल्तेजा है
तेरी बस नज़रे-करम हो , मदनी मदीने वाले
या नबी सलाम अलैका ...

फयाज़ मुहम्मद (शाकिर)
मुबल्लिग़े सुन्नी दावते इस्लामी